समाचार एवं विचार सेवा वार्षिक सहयोग राशि 25/–

महाकौशल–संदेश

वर्ष:– 2019–20 पृष्ठ:– 4 अंक :– 16 संपादक :– डॉ. किशन कछवाहा

RNI No. MPHIN/2001/11140

यह सामग्री 'प्रकाशनार्थ' प्रेषित है। कृपया अपने लोकप्रिय पत्र–पत्रिका में प्रकाशित कर Complimentaryकापी प्रेषित करने की अनुकम्पा करें।

गाँधी परिवार : कितनी असहाय काँग्रेस – डॉ. किशन कछवाहा

लगभग दो माह से चले नाटकीय घटना क्रम के बाद कांग्रेस शासित राज्यों के मुख्यमंत्री भी राहुल गांधी को अपने पद पर बने रहने के लिये मनाने की कोशिश में दरबार में हाजरी लगाने पहुंच गये। बताया गया कि दो घण्टे तक चली मानमनौवल के बाद भी वे नाकाम रहे। यद्यपि विगत दिनों कांग्रेस कार्य समिति राहुल गांधी को इस्तीफा नामंजूर कर चुकी है। उल्लेखनीय है कि लोकसभा चुनाव में कांग्रेस की बुरी तरह पराजय के बाद गत 25 मई को हुई पार्टी कार्यसमिति की बैठक में राहुल गांधी ने अध्यक्ष पद से इस्तीफा देने की पेशकश की थी। वे अभी तक अपने इस्तीफे पर अड़े हुये हैं; हालांकि पार्टी के छोटे–बड़े सभी नेता उनसे आग्रह कर चुके हैं कि वे कांग्रेस का नेतृत्व करते रहें।

लोकसभा चुनाव में इस पराजय के कारण देश भर में कांग्रेस संगठन में भारी उथल–पुथल मची हुयी है। अब तक 150 कांग्रेसी नेता भी इस्तीफा दे चुके हैं। इन इस्तीफों का क्रम भी तब जारी हुआ था, जब राहुल गांधी ने पिछले माह कहा था कि अभी तक किसी कांग्रेसी नेता ने इस्तीफा नहीं दिया है। पता चला है कि महाराष्ट्र ईकाई के नेता सुशील कुमार शिन्दे कांग्रेस के अध्यक्ष हो सकते हैं। राहुल इस बात से भी व्यथित थे कि इस भारी पराजय के बावजूद किसी भी मुख्यमंत्री पार्टी महासचिव और सचिव, पार्टी प्रदेश अध्यक्ष और अन्य पदाधिकारियों ने इस्तीफे की पेशकश तक नहीं की।

इस हार के कारण राहुल गांधी सहित समस्त कांग्रेस नेताओं के आभामंडल की चमक फीकी पड़ी है। उधर नई सरकार अपना कार्यभार सम्हाल चुकी है। प्रकाश नड्डा को कार्यकारी अध्यक्ष बनाकर अमित शाह ने अपना बोझ भी हल्का कर लिया है। यहां कांग्रेस में राहुल गांधी का इस्तीफा रहस्य बना हुआ था। इसे नाटकीय इसलिये भी कहा जा रहा है कि कांग्रेस का एक तबका ऐसा भी है जो उनसे पद पर बने रहने के लिये कह तो रहा है, लेकिन उसे व्यापक समर्थन नहीं मिल रहा है। इससे गांधी परिवार की चिन्तायें बढ़ना स्वाभाविक है। राहुल का यह कहना कि अगला अध्यक्ष उनके परिवार से नहीं होगा। इससे भी समस्यायें बढ़ी है। पार्टी का एक वर्ग प्रियंका वाड्रा को आगे लाने के लिये जी–जान से कोशिश कर रहा था। जब पार्टी महासचिव बनाकर पूर्वी उत्तरप्रदेश का सांगठनिक ढ़ांचा तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी गयी थी, तब यह वर्ग बहुत उत्साहित भी था। सोनिया गांधी की अस्वस्थता के कारण भी सक्रियता में कमी महसूस की जा रही थी। इस चुनाव में यह तथ्य भी बड़ा मजेदार रहा कि सरकारें तो कांग्रेस की रहीं, लेकिन लोकसभा चुनाव में कांग्रेस का सूपड़ा साफ हो गया जिसे हल्के से नहीं लिया जाना चाहिए था–यह गम्भीर मामला है।

गत दिनों राहुल गांधी ने मनाने आये राज्यों के पाँचों मुख्यमंत्रियों से 2 घण्टे तक चर्चाकी उस समय राहुल ने यह भी कहा कि आप लोगों ने सही जानकारी दी होती तो कांग्रेस की ऐसी दुर्दशा न हो पाती। 'खुद को छोड़कर' पार्टी के लिये चुनाव लड़ा होता तो मुझे इस्ताफा क्यों देना पड़ता?

कांग्रेस आज विचित्र प्रकार की छटपटाहट के बीच से गुजर रही है। कांग्रेस नेताओं को अपनी स्वार्थी लाचारी के बीच कुछ समझ नहीं आ रहा है। वे गांधी परिवार से मुक्त होना भी चाहते हैं, और नहीं भी होना चाहते। लेकिन जनता के बीच आना चाहते हैं, जनता की खोयी हुयी सहानुभूति भी पाना चाहते हैं। कांग्रेस की आजादी के दिनों की छवि देखने वाले तो अब बचे नहीं और बचे भी होंगे तो अंगुलियों पर गिनने लायक? जिन्होंने कांग्रेस के इतिहास को ठीक से पढ़ा है, वे समझ सकते हैं कि आज की स्थिति कांग्रेस के लिये कितनी डरावनी बन चुकी है। चुनाव जीतना–हारना तो लगा रहता है लेकिन कांग्रेस की संस्कृति ही सिमट जायेगी, इस पर सहज भरोसा कर लेना भी आसान नहीं होगा? यह प्रश्न चिन्ह है जो लगा रहेगा कि कांग्रेस गांधी परिवार के आजाद होती है या नहीं? क्योंकि यह भी एक महत्वपूर्ण तथ्य है, जिसके कारण जनता ने मजबूरी में मुख मोड़ लिया।

इसी बीच राहुल गांधी ने तीन चुनावी राज्यों के नेताओं के साथ बैठक की। 26जून को महाराष्ट्र, 27जून को हरियाणा और 28जून को दिल्ली इकाई के बड़े नेताओं को अपने आवास पर बुलाया था।

कांग्रेस की कमान नेहरू–गांधी परिवार या परिवार के विश्वस्त लोगों के हाथों में ही रही है। इंदिरा गांधी से लेकर सोनिया गांधी तक परिवारवाद और वंशवाद के तमाम आरोपों के बावजूद यही परिवार कांग्रेस की धुरी बना हुआ है। पार्टी में जिस किसी ने परिवार के खिलाफ राह पकड़ी उसे पार्टीजनों ने ही बाहर का रास्ता दिख दिया। इस संदर्भ में राहुल सोनिया परिवार के मुखिया याने पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के पिता और पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा जी के पति, अनेक बार सांसद रह चुके स्व. फीरोज जहांगीर गाधी का भी उल्लेख किया जा सकता है जिसका नाम लेने से ही कांग्रेसी क्या यह पूरा परिवार परहेज करता है। वे कांग्रेस युग के भ्रष्टाचार के लिखाफ मुहीम चलाने वाले पहले कांग्रेसी नेता के रूप में याद किये जाते हैं।

आज की युवा पीढ़ी वंशवाद को हेय दृष्टि से देखती है। उसका मानना है कि वंशवाद ने देश का बंटाधार कर दिया। संस्कृति, सभ्यता और परम्पराओं को भी ठेस पहुंचायी गयी है। इसके कारण प्रतिमा सम्पन्न और देशभक्तों को उनकी क्षमता और योग्यता के अनुसार अवसर प्राप्त नहीं होते। बाहुबलियों, धनपतियों और अपराधियों को संरक्षण मिलता है।

आज अप्रासंगिक हो गयी कांग्रेस के नेता इस तथ्य को आज भी समझने तैयार नहीं हैं कि पार्टी को फिर से जमीनी हकीकत को समझना पड़ेगा और लोगों के स्वभाव को बदलने की कोशिश भी करनी पड़ेगी। कांग्रेस ने आजादी की लड़ाई लड़ी थी, वह भी लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष में तब्दील कर दिया गया। जिसे देर से ही सही मामूली तौर पर अभी हाल में मंदिर मंदिर जाकर सुधारने की कोशिश की गयी है। राजनेताओं को अहंकार भी जनता और चुने हुये प्रतिनिधियों को चुभने लगा था–इस ओर भी किसी ने ध्यान देने का साहस नहीं जुटाया। इसका सक्रिय कार्यकर्ताओं पर बुरा असर पड़ा है। पं. नेहरू का सेकुलरवाद अर्थात् धर्म निरपेक्षवाद पूर्णतः ब्रिटिश तथा अमरिकियों के चिन्तन पर आधारित था। उन्होंने भारतीय पंथनिरपेक्षता के सिद्धातों को न समझा, न चिन्तर किया, नजदीक से देखने का भी प्रयास नहीं किया। वे धर्म को रिलीजन की तरह समझते रहे। यह चिन्तन महात्मा गांधी के चिन्तन से एक दम विपरीत था। जहां गांधी जी अपने को हिन्दू कहलाने में गौरव का अनुभव करते थे, वहीं नेहरू जी का 'हिन्दू' शब्द से ही एलर्जी बनी रही।

एक सौ तैंतीस साल पुरानी कांग्रेस जिस तरह सिकुड़ गयी है, यह हैरानी की बात है। कार्यकर्ताओं का मनोबल टूट चुका है। इन 60 सालों की सत्ता में एक छत्र पार्टी के शासन काल में आंतरिक लोकतंत्र को पनपने ही नहीं दिया गया। नेहरू से लेकर इंदिरा जी और राजीव गांधी तक इस परिवार का व्यवहार सामंतवादी रहा है। परिवार के अलावा किसी प्रतिभाशाली व्यक्ति को टिकने ही नहीं, दिया गया, ताकि वह आगे चलकर कभी परिवार. को चुनौती न दे सके।

राहुल गांधी के बाद कौन? यह प्रश्न अटका हुआ है। कांग्रेस नेतृत्व इस समय हारा हुआ दिखाई दे रहा है। उसने तो सन् 2014 के बाद से ही हथियार डाल दिये थे। उसने एक सशक्त विपक्ष के सामने प्रदर्शित नहीं हो सकी।

कांग्रेस औपनिवेशिक काल में स्थापित पार्टी है। इस पर आजादी के बाद से ही

शेष भाग पृष्ठ क्र. 4 पर

भारतीय ज्ञान परम्परा का अमूल्य उपहार – योग

जिन प्राचीन भारतीय विद्याओं के ज्ञान से हमारे पूर्वजों ने विश्व को चमत्कृत किया था, उनमें से एक 'योग' भी है। यही कारण है कि भारत की उसी आध्यात्मिक परम्परा से उपजा योग दुनिया को संतुलित जीवन जीने को प्रेरित कर रहा है। आज पूरा विश्व उसी योग को अपना रहा है। आज योग के कारण अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पुनः भारत का गौरव बढ़ा है। योग न केवल तन और मन को स्वस्थ बनाता है वरन् जीवन को संयमित और सुखमय बनाने में सहायक है।

गत 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर सारी दुनिया में हमारी ज्ञान परम्परा को अमूल्य उपहार माना। भारत की पावन भूमि पर यह गंगा प्रवाहित है। प्राचीनकाल से हमारी संस्कृति की यह विरासत 200 ईसा पूर्व जन्में महर्षि पतंजलि के माध्यम से चली आ रही है। उन्होंने ही अष्टाँग योग की नींव रखी थी–ऐसी मान्यता है। अष्टाँग योग पूर्ण मानवता की स्थापना के लिये उचित मार्ग माना जा सकता है जिसका संकेत भगवान श्री कृष्ण ने श्रीमद्भगवद्गीता के अपने उपदेशों में 'धर्मसंस्थापनार्थाय' कहा है। 'सर्वधर्म–समभाव, वसुधैव कुटुम्बकम्' उसी के उद्भूत हैं।

आज विश्व के अनेक देशों लंदन, चीन, जापान, आस्ट्रेलिया, फ्रांस, अमेरिका, जर्मनी, रूस आदि में योग प्रशिक्षण केन्द्रों का संचालन हो रहा है। योग के माध्यम से भी भारत विश्व को शांतिपूर्ण जीवन एवं स्वस्थ जीवन की सीख देने के लिऐ मंच साझा कर रहा है।

27 सितम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में प्रधानमंत्री मोदी ने अपने उद्बोधन में कहा था, ''योग भारत की प्राचीन परम्परा का एक अमूल्य उपहार है। यह दिमाग और शरीर की एकता का प्रतीक है। मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य है। विचार, संयम और पूर्ति प्रदान करने वाला है, तथा स्वास्थ्य और भलाई के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करने वाला भी है। हमारी बदलती जीवन–शैली में यह चेतना बनकर, हमें जलवायु परिवर्तन से निपटने में मदद कर सकता है।''

भारत के पास चमत्कृत कर देने वाली आध्यात्मिक विद्या है, जो विश्व की अनेक समस्याओं का समाधान निकालने में सक्षम है। प्रधानमंत्री मोदी की कोशिशोंसे सन् 2015 में संयुक्त राष्ट्र ने 21 जून को योग दिवस के रूप में घोषित किया था। जिन लोगों ने अपने दैनिक जीवन में योग को एक अंग बना लिया है वे तन की स्वस्थता और मन की सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव करने लगे हैं।

योग परस्पर मिलन का एक पर्याय है। भारतीय प्रज्ञा के अनुसार शिव प्रकृति के रक्षक और संवर्धक हैं। प्रकृति के संपूर्ण विधान को हमारे देवताओं ने योग द्वारा ही संतुलित रखा हुआ है। प्रकृति का धर्म है सबका पालन करना, फिर पुराना होने पर वापिस बुला लेना..... फिर क्रम से नये में परिवर्तित कर वापिस पृथ्वी पर भेजना। दृश्यभाव में साक्ष्यभाव में जो कुछ दिखाई दे रहा है– वह सब योग हैं।

बलूचों में आक्रोश बढता जा रहा है

बलूचिस्तान में पाकिस्तान द्वारा अत्याचारों का सारी हदें पार की जा रही है। लेकिन दुनिया का ध्यान इस ओर नहीं है। बलूच प्रदर्शनकारियों को घर से निकालकर पीटा जा रहा है। बलूच आजादी की बहाली के लिये अपनी जान कुर्बान करने आमादा हैं। इन बलूचों का मानना है कि पाकिस्तान ने कलात के खान से जबरदस्ती दस्तखत कराकर बलूचिस्तान पर 27 मई 1948 का जबरन कब्जा कर लिया। जिस वक्त पाकिस्तान ने बलूचिस्तान पर कब्जा किया, उस समय वहां कलात नेशनल पार्टी हुकूमत में थी, जो लोकतांत्रिक तरीक से चुनाव जीतकर आई थी। पाकिस्तानी कब्जे का विरोध हर किसी ने किया था।

गिलगिट–बाल्टिस्तान से लेकर बलूचिस्तान और खैबर पख्तूनख्वा तक उससे अलग होने के ख्वाहिशमंद हैं।

कठुआकाण्ड – निर्दोष को फँसाने गढ़ी कहानी

कठुआ बलात्कार में जिस विशाल जंगोत्रा को जम्मू–कश्मीर अपराधा शाखा ने आठ वर्षीय बच्ची के बलात्कार और हत्या की कहानी गढ़कर गिरफ्तार किया था तथा निष्पक्ष एवं सेकुलर कहे जाने वाले मीडिया के एक वर्ग ने अपराधी ठहराया था, उसे अदालत ने बेगुनाह बताते हुये बरी कर दिया। इसी के साथ अपराध शाखा और मीडिया ट्रायल चलाने वाले पत्रकार बेनकाब हो गये।

अधिवक्ताओं ने विशाल जंगोत्रा को निरअपराध मानते हुए जम्मू में उसके समर्थन में तिरंगा यात्रा भी निकाली थी। क्या तिरंगा यात्रा का बदनाम करने वाले और विशाल जंगोत्रा को बलात्कारी बतलाने वाले अब उससे क्षमा मागेंगे?

पुलिस हिरासत में विशाल को बेरहमी से पीटा जाता था, ताकि वह कबूल कर ले कि उसने आठ वर्षीया आसिफा का बलात्कार और हत्या की। जम्मू–कश्मीर पुलिस जिसे हत्यारा और बलात्कारी बता रही है, वह घटना के दिन वहां पर था ही नहीं। कतिपय आतंकवाद समर्थक लोग इस मामले में बड़ी दिलचस्पी ले रहे थे। अब यह सवाल तो पूछा ही जाना चाहिये कि पुलिस ने किसके इशारे पर एक निर्दोष को फँसाने के फर्जी कहानी गढ़ी।

योग शिक्षिका राफिया नाज के हौसले बुलन्द

22 वर्षीय राफिया नाज योग सिखा रहीं हैं। कट्टरवादी फतवे जारी कर रहे हैं, जान से मारने की धमकियाँ दी जा रहीं हैं, घर पर हमले हो रहे हैं, राह चलते अभद्रभाषा का इस्तेमाल किया जाता है।

'योग बियान्ड रिलीजन' संस्था के माध्यम से अनाथ–गरीब बच्चों को योग सिखाकर योग्य इंसान बनाने की जिद ठानकर आगे बढ़ रहीं राफिया योग गुरू बाबा रामदेव के साथ मंच साझा करते हुये लोगों के तानों को नजर अंदाज कर रही है।

उसका मानना है कि योग से कठमुल्लों को क्या दिक्कत है? राफिया चार साल की उम्र से योग कर रही है। राफिया अब तक 100 से अधिक योग कार्यक्रमों में शामिल हो चुकी हैं। कई पुरस्कार भी मिल चुके हैं।

उसका कहना है कि किसी भी कट्टरपंथी से डरने की जरूरत नहीं है। उसकी संस्था का एक ही उद्देश्य है, योग के माध्यम से बच्चों को सशक्त बनाना और एक अच्छे मनुष्य का निर्माण करना।

नया भारत बनाने में जापान सहयोगी

जापान में भारतीय समुदाय द्वारा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का जोरदार स्वागत किया और 'भारत माता की जय' और 'जय श्री राम' के नारे लगाये। इस अवसर पर भारतीय समुदाय को सम्बोधित करते हुये कहा, 'आज भारत में ऐसा कोई भी हिस्सा नहीं है जहां जापान की परियोजनाऐं या निवेश की छाप नहीं है। इसी तरह भारतीय प्रतिमा और श्रमबल ने भी जापान को मजबूत बनाने में अपना योगदान दिया है।'

इसी अवसर पर उन्होंने कहा कि आगामी पांच वर्षों में हमारा लक्ष्य भारत की 5,000 अरब डालर की अर्थ व्यवस्था को खड़ा करना है। सामाजिक क्षेत्र हमारी शीर्ष प्राथमिकता है। इसके पहले दोनों देशों ने कार बनाने के लिये आपस में सहयोग की शुरूआत की थी और अब दोनों मिलकर बुलेट ट्रेन बनाने जा रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि हम जल्द ही चन्द्रयान–2 लांच करने वाले हैं। वर्ष 2022 तक हमारी योजना मानव रहित अंतरिक्ष यात्रा अभिमान के तहत गगनयान छोड़ने की है।

शिव मंदिरों के बारे में रोचक तथ्य

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि भारत में ऐसे शिव मंदिर हैं जो केदारनाथ से लेकर रामेश्वरम तक एक सीधी रेखा में बनायें गये हैं। आश्चर्य है कि हमारे पूर्वजों के पास ऐसा कैसा विज्ञान और तकनीक थी जिसे हम आज तक समझ नहीं पाये? उत्तराखण्ड का केदारनाथ, तेलंगाना का कालेश्वरम, आन्ध्रप्रदेश का कालहस्ती, तमिलनाडू का एकंबरेश्वर, चिदंबरम और अंततः रामेश्वरम मंदिरों को 79अंश पूर्व 41' 54''लांगिट्यूड के भौगोलिक सीधी रेखा में बनाया गया है।

यह सारे मंदिर प्रकृति के 5 तत्वों में लिंग की अभिव्यक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसे हम आम भाषा में पंच भूत कहते हैं। पंच भूत यानि पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और अंतरिक्ष। इन्हीं पांच तत्वों के आधार पर इन पांच शिव लिंगों को प्रतिष्ठापित किया है। जल का प्रतिनिधित्व तिरूनैकवल मंदिर में है, आग का प्रतिनिधित्व तिरूवन्नमलई में है, हवा का प्रतिनिधित्व कालाहस्ती में है, पृथ्वी का प्रतिनिधित्व कांचीपुरम में है और अंत में अंतरिक्ष का या आकाश का प्रतिनिधित्व चिदंबरम मंदिर में है। वास्तु–विज्ञान–वेद का अद्भूत समागम को दर्शाते हैं ये पांच मंदिर।

भौगोलिक रूप से भी इन मंदिरों में विशेषता पायी जाती है। इन पांच मंदिरों को योग विज्ञान के अनुसार बनाया गया था और एक दूसरे के साथ एक निश्चित भौगोलिक सरेखण में रखा गया है। इस के पीछे निश्चित ही कोई विज्ञान होगा। इन मंदिरों का करीब चार हजार वर्ष पूर्व निर्माण किया गया था। जब उन स्थानों के अक्षांश और देशांतर को मापने के लिये कोई उपग्रह तकनीक उपलब्ध ही नहीं था तो फिर कैसे इतने सटीक रूप से पांच मंदिरों को प्रतिष्ठापित किया गया था?

केदारनाथ और रामेश्वरम के बीच की दूरी 2383 किमी है। लेकिन ये सारे मंदिर लगभग एक ही समानांतर रेखा में पड़ते हैं। आखिर हजारों वर्ष पूर्व किस तकनीक का उपयोग कर इन मंदिरों को समानांतर रेखा में बनाया गया यह आज तक रहस्य ही है। श्री कालहस्ती मंदिर में टिमटिमाते दीपक से पता चलता है कि वह वायु लिंग है। तिरूवनिक्का मंदिर के अंदरूनी पठार में जल वसंत से पता चलता है कि यह जल लिंग है। अन्नामलाई पहाड़ी पर विशाल दीपक से पता चलता है कि यह अग्नि लिंग है। कांचीपुरम के रेत के स्वयंभू लिंग से पता चलता है कि वह पृथ्वी लिंग है और चिदंबरम की निराकार अवस्था से भगवान के निराकार यानि आकाश तत्व का पता लगता है।

अब यह आश्चर्य की बात नहीं तो और क्या है कि ब्रह्माण्ड के पांच तत्वों को प्रतिनिधित्व करने वाले पांच लिंगों को एक समान रेखा में सदियों पूर्व ही प्रतिष्ठापित कर दिया गया है। हमें हमारे पूर्वजों के ज्ञान और बुद्धिमता पर गर्व होना चाहिए कि उनके पास ऐसा विज्ञान और तकनीक था जिसे आधुनिक विज्ञान भी नहीं भेद पाया है। माना जाता है कि केवल यह पांच मंदिर ही नहीं अपितु इसी रेखा में अनेक मंदिर होंगे जो केदारनाथ से रामेश्वरम तक सीधी रेखा में पड़ते हैं। इस रेखा को ''शिव शक्ति अक्श रेखा'' भी कहा जाता है। सम्भवतः यह सारे मंदिर कैलाश को ध्यान में रखते हुए बनाये गये हों जो 81.3119अंश पूर्व में पड़ता है।

कमाल की बात है ''महाकाल'' से शिव ज्योतिर्लिंगों के बीच कैसा संबंध है?

उज्जैन से सोमनाथ 777 किमी
उज्जैन से ओंकारेश्वर 111 किमी
उज्जैन से भीमाशंकर 666 किमी
उज्जैन से काशी विश्वनाथ 999
उज्जैन से मल्लिकार्जुन 999किमी
उज्जैन से केदारनाथ 888 किमी
उज्जैन से त्र्यंबकेश्वर 555 किमी
उज्जैन से बैजनाथ 999 किमी
उज्जैन से रामेश्वरम 1999 किमी
उज्जैन से घृष्णेश्वर 555 किमी

हिन्दू धर्म में बिना कारण कुछ भी नहीं होता

उज्जैन पृथ्वी का केन्द्र माना जाता है। इसको सनातन धर्म में हजारों सालों से केन्द्र मानते आ रहे हैं इसलिये उज्जैन में सूर्य की गणना और ज्योतिषगणना के लिये मानव निर्मित यंत्र भी बनाये गये हैं, करीब 2050 वर्ष पहले। और जब करीब 100 वर्ष पूर्व पृथ्वी पर काल्पनिक रेखा (कर्क) अंग्रेज वैज्ञानिकों द्वारा बनाई गयी तो उनका मध्य भाग उज्जैन ही निकला। आज भी वैज्ञानिक उज्जैन ही आते हैं सूर्य और अंतरिक्ष की जानकारी के लिये।

वर्ष में एक दिन खुलने वाला उज्जैन का नागचंद्रेश्वर मंदिर

हिन्दू धर्म में सदियों से नागों की पूजा करने की परम्परा रही है। हिन्दू परंपरा में नागों को भगवान का आभूषण माना गया है। भारत के नागों के अनेक मंदिर बने हैं, इन्हीं मंदिरों में से एक मंदिर उज्जैन स्थित नागचन्द्रेश्वर का, जो कि उज्जैन के प्रसिद्ध महाकाल मंदिर की तीसरी मंजिल पर स्थित है। इसकी खास बात यह है कि यह मंदिर साल में सिर्फ एक दिन नागपंचमी (श्रावण शुक्ल पंचमी) पर ही दर्शनों के लिये खोला जाता है। ऐसी मान्यता है कि इस दिन नागराज तक्षक स्वयं मंदिरों में रहते हैं। नागचन्देश्वर मंदिर में 11वीं शताब्दी की एक अद्भुत प्रतिमा है, इसमें फन फैलाये नाग के आसन पर शिव पार्वती बैठे हैं। कहते हैं यह प्रतिमा नेपाल से यहां लाई गई थी। उज्जैन के अलावा दुनिया में कहीं भी ऐसी प्रतिमा नहीं है। पूरी दुनिया में यह एकमात्र मंदिर है, जिसमें विष्णु भगवान की जगह भगवान भोलेनाथ सर्प शय्या पर विराजमान हैं। मंदिर में स्थापित प्राचीन मूर्ति में शिवजी, गणेशजी, माँ पार्वती के साथ दशमुखी सर्प शय्या पर विराजित हैं। शिवशम्भू के गले और भुजाओं में भुजंग लिपटे हुए हैं। सर्पराज तक्षक ने शिवशंकर को मनाने के लिये घोर तपस्या की थी। तपस्या में भोलेनाथ प्रसन्न हुए और उन्होंने सर्पों के राजा तक्षक नाम को अमरत्व का वरदान दिया। मान्यता है कि उसके बाद से तक्षक राजा ने प्रभू के सान्निध्य में ही वास करना शुरू कर दिया। लेकिन महाकाल वन में वास करने से पूर्व उनकी यह मंशा थी कि उनके एकांत में विघ्न न हो, अतः वर्षों से यही प्रथा है कि मात्र नागपंचमी के दिन ही दर्शन करने के बाद व्यक्ति किसी भी तरह के सर्पदोष से मुक्त हो जाता है। इसलिये नागपंचमी के दिन खुलने वाले इस मंदिर के बाहर भक्तों की लम्बी कतार लगी रहती है। यह मंदिर काफी प्राचीन है। माना जाता है कि परमार राजा भोज ने 1050 ईस्वी के लगभग इस मंदिर का निर्माण कराया था। इसके बाद सिंधिया घराने के महाराज राणोजी सिंधिया ने 1732 में महाकाल मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया था।उस समय इस मंदिर का भी जीर्णोद्धार हुआ था। नागपंचमी के शुभ दिन सभी भक्तों की यही मनोकामना रहती है कि नागराज पर विराजे शिवशम्भू की उन्हें एक झलक देखने को मिल जाये।

असली रामराज्य थाईलैण्ड में है

भारत के बाहर थाईलैण्ड में आज भी संवैधानिक रूप में राम राज्य है। वहां भगवान राम के छोटे पुत्र कुश के वंशज सम्राट ''भूमिबल अतुल्य तेज'' राज्य कर रहे हैं, जिन्हें नौवां राम कहा जाता है।

भगवान राम का संक्षिप्त इतिहास

वाल्मीकि रामायण एक धार्मिक ग्रंथ होने के साथ एक ऐतिहासिक ग्रंथ भी है, क्योंकि महर्षि वाल्मीकि राम के समकालीन थे, रामायण के बालकाण्ड के सर्ग, 70/71 और 73 में राम और उनके तीनों भाइयों के विवाह का वर्णन हे, जिसका सारांश है।

मिथिला के राजा सीरध्वज थे, जिन्हें लोग विदेह भी कहते थे, उनकी पत्नी का नाम सुनेत्रा (सुनयना) था, जिनकी पुत्री सीता जी थीं, जिनका विवाह राम से हुआ था। राजा जनक के कुशध्वज नाम के भाई थे। इनकी राजधानी सांकाश्य नगर थी जो इशुमती नदी के किनारे थी। इन्होंने अपने बेटी उर्मिला लक्ष्मण से मांडवी भरत से, और श्रुतिकीर्ति का विवाह शत्रुघ्न से करा दिया था। केशवदास रचित ''रामचिन्द्रका'' पृष्ठ 354(प्रकाशन संवत 1715) के अनुसार, राम और सीता के पुत्र लव और कुश, लक्ष्मण और उर्मिला के पुत्र अगंद और चन्द्रकेतु, भरत और मांडवी के पुष्कर और तक्ष, शत्रुघ्न और श्रुतिकीर्ति के पुत्र सुबाहू और शत्रुघात हुए थे।

भगवान नाम के समय ही राज्यों का बँटवारा–

पश्चिम में लव को लवपुर(लाहौर), पूर्व में कुश को कुशावती, तक्ष को तक्षशिला, अंगद को अंगद नगर, चन्द्रकेतु को चंद्रावती कुश से विवाह किया था। थाईलैण्ड के राजा उसी कुश के वंशज हैं। इस वंश को ''चक्री वंश'' कहा जाता है। चूंकि राम को विष्णु का अवतार माना जाता है, और विष्णु का आयुध चक्र हैं इसीलिए थाईलैण्ड के लॉग चक्रीवंश के हर राजा को ''राम'' की उपाधि देकर नाम के साथ संख्या दे देते हैं। जैसे अभी राम(9) राजा हैं जिनका नाम ''भूमिबल अतुल्य तेज'' है।

शेष भाग पृष्ठ क्रमांक 4 पर

शेष भाग पृष्ठ क्र. 1 का

नेहरू–गांधी परिवार का वर्चस्व रहा है। पार्टी में लोकतंत्र का मतलब परिवार के हर फरमान पर 'कुबूल' है। पिता की सत्ता पुत्री के हाथ, माँ के बाद राजीव का राज, प्रधानमंत्री की कुर्सी के पीछे, सोनिया और अब की बारी राहुल? प्रियंका उनके पति वाड्रा जो देश के बड़े कारोबारी के रूप में अपनी ताकत कई गुना बढ़ा चुका हैं, वह भी राजनीति में कदम रखने के उत्सुक हैं। भृष्टाचार के सवालों पर जूझ रहा यह परिवार राजनैतिक कुशलता में पिछड़ रहा है।

राहुल गांधी की राजनैतिक कुशलता और क्षमता को समझने देशवासियों को अनेक अवसर मिले। देश में भी और देश के बाहर भी जो कुछ उन्होंने कहा वह देश की संस्कृति को अपमानित करने वाला सिद्ध हुआ। केलिफोर्निया यूनिवर्सिटी के मंच पर जो कहा गया वह तो देश को अपमानित करने वाला ही सिद्ध हुआ। वे देश के यथार्थ को समझ ही नहीं सके हैं। यह देश प्राचीन सभ्यता और संस्कृति का देश है। यह क्रांतिकारियों और कुर्बानियों का देश है। विदेशी जमीन पर उन्होंने जो कुछ कहा, उससे परिवारिक अहंकार ही प्रगट हुआ। यह अहंकार उस समय सीमा पार कर गया जब उन्होंने प्रेस क्लब ऑफ इंडिया में आकर एक अध्यादेश जो उनकी ही पार्टी द्वारा जारी किया गया था, 'नॉनसेंस' कहते हुए फाड़ दिया था। देश की व्यवस्था में संसद से बढ़कर कोई नहीं है। लेकिन इस देश की परम्परा रही है कि हम विदेश ी जमीन पर अपने देश और अपनी सरकार की निन्दा नहीं करते। राहुल जी चाहते तो अपनी दादी और देश के सर्वमान्य नेता अटलबिहारी वाजपेयी के उदाहरणों से भी बहुत कुछ सीख सकते थे। पर अब क्या? अब तो सारा खेल उलट–पलट हो गया।

इसमें शंका नहीं कि कांग्रेस एक विचारधारा है। क्या इस विचारधारा को राहुल गांधी जमीन पर उतार सकने में सफल हो पाये हैं? यदि राहुल गांधी कांग्रेस का नेतृत्व देने में सफल और सिंहावलोकन भी करना चाहिये। यह धारणा गहराई से बैठी है कि कांग्रेस गांधी–नेहरू परिवार की पार्टी है। क्या इससे बाहर निकलने की आज जरूरत है? देश के अठारह राज्यों से कांग्रेस का एक भी सांसद न चुना जाना सवाल तो खड़ा करता ही है। भले ही इसे कांग्रेस का पराभव काल न माना जाय।

अन्ततः राहुल गांधी के इस्तीफे के घटनाक्रम के चलते गांधी परिवार के विश्वस्त एवं वफादार 90 वर्षीय वर्तमान कोषाध्यक्ष मोतीलाल वोरा को अंतरिम अध्यक्ष बनाये जाने की खबर है। जैसी कि लोगों को आशंका थी, ठीक उसी क्रम में रिमोट कन्ट्रोल के जरिये पार्टी की लगाम अपने हाथों में बरकरार रखने प्रयासों के तहत संभवतः ऐसा निर्णय लिया गया होगा।

विगत दिनों अध्यक्ष पद से इस्तीफा दिये जाने की घोषणा के साथ जो चार पृष्ठ का पत्र जारी किया है, उसमें वह यह स्वीकार करने को तैयार नहीं है कि कांग्रेस ने कोई गल्ती की है। इससे तो यही संकेत मिलता है कि पार्टी कांग्रेस परिवार के प्रभाव से मुक्त नहीं हो पायेगी। एक तरफ अभी तो प्रियंका वाड्रा महासचिव बनी हुयी हैं। साथ ही अधिकांश कांग्रेसी नेता इस मानसिकता को छोड़ नही पा रहे कि कांग्रेस को गांधी परिवार के सहारे की आवश्यकता है जबकि कांग्रेस को जनप्रियता हासिल करने के लिय इस मानसिकता से बाहर निकलने की है। जो गल्तियाँ अतीत में हुयीं हैं, उनकी भी पहचान करना क्या आवश्यक नहीं? यहां तक कि गांधी–नेहरू परिवार पर भृष्टाचार के गम्भीर आरोप लगे हैं। कितना आश्चर्यजनक है कि इतनी बड़ी पराजय से सबक लेने के बजाय कांग्रेस का एक वर्ग राहुल की असफलता और अक्षमता को 'बलिदान' सिद्ध करने में जुटा हुआ है।

पृष्ठ क्रमांक 3 का शेष भाग

थाईलैण्ड की अयोध्या–

लोग थाईलैण्ड की राजधानी को अंग्रेजी में बैंकॉक कहते हैं, क्योंकि इसका सरकारी नाम इतना बड़ा है, कि इसे विश्व को सबसे बड़ा नाम माना जाता है, इसका नाम संस्कृत शब्दों से मिलकर बना है, देवनागरी लिपि में पूरा नाम इस प्रकार है। ''क्रुंग देव महानगर अमर रत्न कोसिन्द्र महिन्द्रायुध्या महातिलक भव नवरत्न राजधानी पुरी रम्य उत्तम राज निवेशन महास्थान अमर विमान अवतार स्थित शक्रदत्तिय विष्णु कर्म प्रसिद्धि।''

थाई भाषा में इस पूरे नाम में कुल 163 अक्षरों का प्रयोग किया गया है। इस नाम की एक और विशेषता है। इसे बोला नहीं बल्कि गाकर कहा जाता है। कुछ लोग आसानी के लिए इसे ''महेन्द्र अयोध्या'' भी कहते हैं अर्थात् इन्द्र द्वारा निर्मित महान अयोध्या। थाईलैण्ड के जितने भी राम (राजा) हुए हैं। सभी इसी अयोध्या में रहते आये हैं।

असली राम राज्य थाईलैण्ड में है–

बौद्ध होने के बावजूद थाईलैण्ड के लोग अपने राजा को राम का वंशज होने से विष्णु का अवतार मानते हैं, इसलिए, थाईलैण्ड में एक तरह से राम राज्य है। वहां के राजा को भगवान श्रीराम का वंशज माना जाता है। थाईलैण्ड में संवैधानिक लोकतंत्र की स्थापना 1932 में हुई।

भगवान राम के वंशजों की यह स्थिति है कि उन्हें निजी अथवा सार्वजनिक तौर पर कभी भी विवाद या आलोचना के घेरे में नहीं लाया जा सकता है वे पूजनीय है। थाई शाही परिवार के सदस्यों के सम्मुख थाई जनता उनके सम्मानार्थ सीधे खड़ी नहीं हो सकती है, बल्कि उन्हें झुक कर खड़े होना पड़ता है, उनकी तीन पुत्रियों में से एक हिन्दूधर्म की मर्मज्ञ मानी जाती है।

थाईलैण्ड का राष्ट्रीय ग्रंथ ''रामायण'' है–

यद्यपि थाईलैण्ड में थेरावाद बोद्ध के लोग बहुसंख्यक है, फिर कभी वहां का राष्ट्रीय ग्रंथ रामायण है। जिसे थाई भाषा में ''राम कियेन'' कहते हैं। जिसका अर्थ राम कीर्ति होता है, जो वाल्मिकी रामायण पर आधारित है। इस ग्रंथ की मूल प्रति सन 1767 में नष्ट हो गयी थी, जिससे चक्री राजा प्रथम राम (1736–1809), ने अपनी स्मरण शक्ति से फिर से लिख लिया था। थाईलैण्ड में रामायण को राष्ट्रीय ग्रंथ घोषित करना इसलिए संभव हुआ, क्योंकि वहां भारत की तरह दोगले हिन्दु नहीं है, जो नाम के हिन्दू हैं, हिन्दुओं के दुश्मन यही लोग हैं।

थाईलैण्ड में राम कियेन पर आधारित नाटक और कठपुतलियों का प्रदर्शन देखना धार्मिक कार्य माना जाता है राम कियेन के मुख्य पात्रों के नाम इस प्रकार है– 1. राम(राम),2. लक(लक्ष्मण),3.पाली(बाली), 4. सुक्रीप(सुग्रीव), 5.ओन्कोट(अंगद), 6. खोम्पून(जाम्बवन्त), 7.बिपेक(विभीषण), 8.तोतस कन(दशकण्ठ)रावण, 9. सदायु(जटायु), 10.सुपन मच्छा (सूर्पणखा), 11.मारित(मारिच), 12. इन्द्रचित(इन्द्रजीत),मेघनाद, 13.फ्र पाई(वायुदेव)। इत्यादि.....थाई राम कियेन में हनुमान की पुत्री और विभीषण की पत्नी का नाम भी है, जो यहाँ के लोग नहीं जानते।

थाईलैण्ड में हिन्दू देवी–देवता

थाईलैण्ड में बौद्ध बहुसंख्यक और हिन्दू अल्पसंख्यक हैं। वहां कभी सम्प्रदायवादी दंगे नहीं हुए। थाईलैण्ड में बौद्ध भी जिन हिन्दू देवताओं की पूजा करते हैं उनके नाम इस प्रकार हैः– 1.ईसूअन(ईश्वन), ईश्वर शिव 2.नाराड(नारायण)विष्णु, 3. इन(इन्द्र),4.आथित(आदित्य)सूर्य 5. पाय(पावन)वायु।

थाईलैण्ड का राष्ट्रीय चिह्न गरूड़

गरूड़ एक बड़े आकार का पक्षी है जो लगभग लुप्त हो गया है। अंग्रेजी में इसे ब्राह्मणी पक्षी(The Brahminy Kite)कहा जाता है, इसका वैज्ञानिक पक्षी ''Haliastur Indus'' है। फ्रेंच पक्षी विशेषज्ञ मथुरिन जैक्स ब्रिसन ने इसे सन् 1760 में पहली बार देखा था, और इसका नाम Falco Indus रख दिया था इसने दक्षिण भारत के पाण्डिचेरी शहर के पहाड़ों में गरूड़ देखा था। इस से सिद्ध होता है कि गरूड़ काल्पनिक पक्षी नहीं है। इसीलिए भारतीय पौरोणिक ग्रंथों में गरूड़ को विष्णु का वाहन माना गया है। चूंकि राम विष्णु के अवतार हैं, और थाईलैण्ड के राजा राम के वंशज हैं, और बौद्ध होने पर भी हिन्दू धर्म पर अटूट आस्था रखते हैं, इसलिए उन्होंने ''गरूड़'' को राष्ट्रीय चिह्न घोषित किया है। यहां तक कि थाई संसद के सामने गरूड़ बना हुआ है।

सूचना

कृपया आप अपना सुझाव महाकोशल संदेश के ई–मेल व्हाट्सअप नं. 9713223539 पर भेजें।

– सम्पादक

प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. किशन कछवाहा द्वारा विश्व संवाद केन्द्र, महाकोशल, प्लाट नं–1, म.नं. 1692, नवआदर्श कालोनी, के लिये ओम आफसेट प्रिन्टर्स 239, यूनियन बैंक के सामने बल्देवबाग चौक, जबलपुर द्वारा मुद्रित। प्रकाशन स्थान–विश्व संवाद केन्द्र प्लाट नं 1, म.नं. 1692 नवआदर्श कॉलोनी गढ़ा मार्ग जबलपुर मध्यप्रदेश । संपादक– डॉ. किशन कछवाहा-
Email:- vskjbp@gmail.com kishan_kachhwaha@rediffmail.com